CBSE Class 11 History Important Questions Chapter 2 तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
रोमन साम्राज्य को किन दो भागों में बाँटा जा सकता है?
उत्तर:
(1) पूर्ववर्ती साम्राज्य तथा
(2) परवर्ती साम्राज्य।

प्रश्न 2.
रोम में गणतन्त्र की अवधि क्या थी?
उत्तर;
509 ई. पूर्व से 27 ई. पूर्व तक।

प्रश्न 3.
आगस्टस कौन था ?
उत्तर:
आगस्टस रोम का प्रथम सम्राट था।

प्रश्न 4.
रोमन साम्राज्य के राजनीतिक इतिहास में तीन प्रमुख खिलाड़ी कौन थे ?
उत्तर:

- सम्राट
- सैनेट
- सेना।

प्रश्न 5.
रोम में गृह-युद्ध कब हुआ था?
उत्तर:
रोम में गृह-युद्ध 66 ई. में हुआ था।

प्रश्न 6.
रोम के शहरी जीवन की एक प्रमुख विशेषता बताइये।
उत्तर:
सार्वजनिक स्नान गृह।

evidyarthi

प्रश्न 7.
रोम में किस प्रकार के परिवार का व्यापक रूप से चलन था ?
उत्तर:
रोम में एकल परिवार का व्यापक रूप से चलन था।

प्रश्न 8.
रोमन साम्राज्य में किस नगर में साक्षरता व्यापक रूप से विद्यमान थी ?
उत्तर:
पोम्पई नगर में।

प्रश्न 9.
रोमन साम्राज्य के ऐसे चार क्षेत्रों के नाम लिखिए जो अपनी असाधारण उर्वरता के कारण प्रसिद्ध थे ।
अथवा
स्ट्रैबो तथा प्लिनी के अनुसार रोमन साम्राज्य के घनी आबादी वाले तथा धन-सम्पन्न चार नगर कौन-से थे ?
उत्तर:

- कैम्पैनिया
- सिसली
- फैय्यूम
- गैलिली।

प्रश्न 10.
रोमन साम्राज्य के ऐसे दो क्षेत्रों का उल्लेख कीजिये जो बहुत कम उन्नत अवस्था में थे।
उत्तर:
(1). नुमीडिया (आधुनिक अल्जीरिया) तथा
(2) स्पेन का उत्तरी क्षेत्र।

प्रश्न 11.
रोम के कौन-से दो प्रदेश रोम को भारी मात्रा में गेहूँ का निर्यात करते थे ?
उत्तर:
(1) सिसली तथा
(2) बाइजैकियम।

प्रश्न 12.
रोमन सम्राट कान्स्टैन्टाइन ने किस नगर को अपनी दूसरी राजधानी बनाया?
उत्तर:
कुस्तुन्तुनिया को।

प्रश्न 13.
रोमवासियों के चार प्रमुख देवी-देवताओं के नाम लिखिए।
उत्तर:

- जूपिटर

- जूनो
- मिनर्वा
- मार्स।

प्रश्न 14.
'एकाश्म' का शाब्दिक अर्थ बताइये।
उत्तर:
एकाश्म का तात्पर्य एक बड़ी चट्टान का टुकड़ा होता है। यह विविधता की कमी का सूचक है।

प्रश्न 15.
सातवीं शताब्दी में रोमन साम्राज्य अधिकतर किस नाम से जाना जाता था?
उत्तर:
बाइजेंटियम।

प्रश्न 16.
रोम में सालिडस नामक सोने का सिक्का किसने चलाया था?
उत्तर:
रोमन सम्राट कान्स्टैन्टाइन ने।

प्रश्न 17.
रोम साम्राज्य का ईसाईकरण करने का श्रेय किस सम्राट को दिया जाता है?
उत्तर:
कान्स्टैन्टाइन को।

प्रश्न 18.
रोम के लोग किस नाम के वृक्षों पर लेखन कार्य करते थे?
उत्तर:
पेपाइरस नाम के वृक्षों पर।

प्रश्न 19.
आगस्टस ने 'प्रिंसिपेट' की स्थापना कब की थी?
उत्तर:
27 ई. पूर्व में।

प्रश्न 20.
रोम क्यों प्रसिद्ध है ?
उत्तर:
अपने विशाल साम्राज्य, गणतन्त्रीय व्यवस्था, कला, साहित्य की उन्नति के कारण।

प्रश्न 21.
रोम साम्राज्य का विस्तार क्षेत्र बताइए।
उत्तर:

https://www.evidyarthi.in/

रोम साम्राज्य में आज का अधिकांश यूरोप और उर्वर अर्द्धचन्द्राकार क्षेत्र अर्थात् पश्चिमी एशिया तथा उत्तरी अफ्रीका का बहुत बड़ा हिस्सा शामिल था।

प्रश्न 22.
रोम के इतिहास की स्रोत सामग्री को किन वर्गों में बाँटा जा सकता है ?
उत्तर:
रोम के इतिहास की स्रोत सामग्री को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है –

- पाठ्य सामग्री
- प्रलेख या दस्तावेज तथा
- भौतिक अवशेष

प्रश्न 23.
रोम्मन गणतन्त्र (रिपब्लिक) से आप क्या समझते हैं ?
उत्तर:
रोम साम्राज्य में गणतन्त्र (रिपब्लिक) एक ऐसी शासन व्यवस्था थी जिसमें वास्तविक सत्ता 'सैनेट' नामक निकाय में निहित थी।

प्रश्न 24.
'प्रिंसिपेट' से क्या अभिप्राय है?
उत्तर:
रोमन सम्राट आगस्टस ने 27 ई. पूर्व में जो राज्य स्थापित किया था, उसे 'प्रिंसिपेट' कहा जाता था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
रोम के इतिहास को जानने के मुख्य स्रोतों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
रोम के इतिहास को जानने के स्रोतों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है
–

1. पाठ्य सामग्री
2. प्रलेख अथवा दस्तावेज और
3. भौतिक अवशेष।

(1) पाठ्य सामग्री – पाठ्य सामग्री के अन्तर्गत समकालीन व्यक्तियों द्वारा लिखा गया उस काल का इतिहास, पत्र, व्याख्यान, प्रवचन, कानून आदि सम्मिलित हैं।

(2) प्रलेख या दस्तावेज – प्रलेखों या दस्तावेजों में मुख्य रूप से उत्कीर्ण अभिलेख या पैपाइरस वृक्ष के पत्तों आदि पर लिखी गई पाण्डुलिपियाँ सम्मिलित हैं। काफी बड़ी संख्या में संविदा-पत्र, लेख, संवाद पत्र और सरकारी दस्तावेज आज भी 'पैपाइरस' पत्र पर लिखे हुए पाए गए हैं और पैपाइरस शास्त्री कहे जाने वाले विद्वानों द्वारा प्रकाशित किये गए हैं।

https://www.evidyarthi.in/

(3) भौतिक अवशेष – भौतिक अवशेषों में अनेक प्रकार की वस्तुएँ शामिल हैं जो मुख्य रूप से पुरातत्त्वविदों को खुदाई और सर्वेक्षण के द्वारा अपनी खोजों में प्राप्त हुई हैं। इनमें इमारतें, स्मारक, मिट्टी के बर्तन, सिक्के आदि शामिल हैं।

प्रश्न 2.
रोम साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
रोम साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति – यूरोप और अफ्रीका के महाद्वीप एक समुद्र द्वारा एक-दूसरे को पृथक् किए हुए हैं जो पश्चिम में स्पेन से लेकर पूर्व में सीरिया तक फैला हुआ है। यह समुद्र भूमध्य सागर कहलाता है। भूमध्य सागर उन दिनों रोम साम्राज्य का हृदय था। रोम का भूमध्य सागर तथा उसके आस-पास उत्तर और दक्षिण में स्थित सभी प्रदेशों पर प्रभुत्व था। उत्तर में साम्राज्य की सीमा दो महान नदियाँ राइन और डैन्यूब निर्धारित करती थीं। दक्षिण सीमा का निर्धारण सहारा नामक एक विस्तृत रेगिस्तान से होता था । इस प्रकार रोम साम्राज्य एक अत्यन्त विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ था।

प्रश्न 3.
ईरानी साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति का वर्णन कीजिये!
उत्तर:
ईरानी साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति-ईरानी साम्राज्य में कैस्पियन सागर के दक्षिण से लेकर पूर्वी अरब तक का सम्पूर्ण प्रदेश और कभी-कभी अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्र भी सम्मिलित थे। रोम और ईरानी साम्राज्यों ने विश्व के उस अधिकांश भाग को आपस में बाँट रखा था जिसे चीनी लोग ता – चिन (वृहत्तर चीन या पश्चिम) कहा करते थे।

प्रश्न 4.
रोमन साम्राज्य तथा ईरानी साम्राज्य में अन्तर बताइए।
अथवा
रोमन साम्राज्य सांस्कृतिक दृष्टि से ईरान की तुलना में किस प्रकार अधिक विविधतापूर्ण था ?
उत्तर:
रोमन साम्राज्य तथा ईरानी साम्राज्य में अन्तर – रोमन साम्राज्य सांस्कृतिक दृष्टि से ईरान की तुलना में कहीं अधिक विविधतापूर्ण था। ईरान पर पहले पार्थियन तथा बाद में ससानी राजवंशों ने शासन किया। उन्होंने जिन लोगों पर शासन किया, उनमें अधिकतर ईरानी थे। इसके विपरीत, रोमन साम्राज्य ऐसे क्षेत्रों तथा संस्कृतियों का एक मिला-जुला रूप था, जो कि मुख्यतः सरकार की एक साझा प्रणाली द्वारा एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए थे । रोमन साम्राज्य में अनेक भाषाएँ बोली जाती थीं, परन्तु प्रशासन में लैटिन तथा यूनानी भाषाओं का ही प्रयोग किया जाता था।

प्रश्न 5.
रोम साम्राज्य में स्थापित गणतन्त्र शासन व्यवस्था की विवेचना कीजिए।
उत्तर:
रोम साम्राज्य में स्थापित गणतन्त्र शासन व्यवस्था – रोम साम्राज्य में गणतन्त्र एक ऐसी शासन व्यवस्था थी जिसमें वास्तविक सत्ता 'सैनेट' नामक निकाय में निहित थी। सैनेट में धनी परिवारों के एक समूह का वर्चस्व था जिन्हें अभिजात कहा जाता था। व्यावहारिक तौर पर गणतन्त्र अभिजात वर्ग की सरकार थी जिसका शासन 'सैनेट' नामक संस्था के माध्यम से चलता था। सैनेट की सदस्यता जीवन-भर चलती थी और उसके लिए जन्म की अपेक्षा धन और पद-प्रतिष्ठा को अधिक महत्त्व दिया जाता था। गणतन्त्र का शासन 509 ई. पूर्व से 27 ई. पूर्व तक चला।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 6.
रोमन सम्राट आगस्टस द्वारा स्थापित राज्य 'प्रिंसिपेट' का वर्णन कीजिए।
अथवा
रोम राज्य के संदर्भ में 'प्रिंसिपेट' से क्या अभिप्राय है?
उत्तर:
रोमन सम्राट आगस्टस द्वारा स्थापित राज्य 'प्रिंसिपेट' – प्रथम रोमन सम्राट आगस्टस ने 27 ई. पूर्व में जो राज्य स्थापित किया था, उसे 'प्रिंसिपेट' कहा जाता था। आगस्टस अपने राज्य का एकछत्र शासक था तथा राज्य की सम्पूर्ण सत्ता उसके हाथों में केन्द्रित थी । उसने यह दर्शाने का प्रयास किया कि वह केवल एक 'प्रमुख नागरिक' (लैटिन भाषा में प्रिंसेप्स) था, निरंकुश शासक नहीं था। ऐसा उसने 'सैनेट' को सम्मान प्रदान करने के लिए किया। उसने सैनेट. को प्रभावहीन बनाने का प्रयास नहीं किया ।

प्रश्न 7.
प्रिंसिपेट में 'सैनेट' तथा 'सम्राट' की स्थिति की विवेचना कीजिये। अभिजात वर्ग के क्या कार्य एवं अधिकार थे ?
अथवा
उत्तर:
सैनेट – सैनेट ने रोम में गणतन्त्र के शासन काल में सत्ता पर अपना नियन्त्रण स्थापित किया था। रोम में सैनेट का अस्तित्व कई शताब्दियों तक बना रहा था । सैनेट में कुलीन एवं अभिजात वर्गों अर्थात् रोम के धनी परिवारों का बोलबाला रहा था। कालान्तर में इस संस्था में इतालवी मूल के जमींदारों को भी सम्मिलित कर लिया गया था। सैनेट और सम्राटों के सम्बन्ध-सम्राटों का मूल्यांकन इस बात से किया जाता था कि वे सैनेट के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करते थे। वे सम्राट सबसे बुरे माने जाते थे जो सैनेट के सदस्यों के प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार करते थे, उनके प्रति सन्देहशील रहते थे तथा उनके साथ क्रूरतापूर्ण बर्ताव करते थे।

प्रश्न 8.
रोमन साम्राज्य में सेना के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
उत्तर:
रोमन साम्राज्य में सम्राट और सैनेट के बाद सेना शासन की एक प्रमुख और महत्त्वपूर्ण संस्था थी। रोम की सेना एक व्यावसायिक सेना थी जिसमें प्रत्येक सैनिक को वेतन दिया जाता था और उसे कम-से-कम 25 वर्ष तक सेवा करनी पड़ती थी। सेना साम्राज्य में सबसे बड़ा एकल संगठित निकाय थी जिसमें चौथी शताब्दी तक 6,00,000 सैनिक थे।

सेना का काफी प्रभाव था और उसके पास निश्चित रूप से सम्राटों का भाग्य निश्चित करने की शक्ति थी। रोमन साम्राज्य के सैनिक अधिक वेतन तथा अच्छी सेवा शर्तों के लिए निरन्तर आन्दोलन करते थे। कभी-कभी ये आन्दोलन सैनिक विद्रोहों का रूप धारण कर लेते थे। सम्राटों की सफलता इस बात पर निर्भर करती थी कि वे सेना पर कितना नियन्त्रण रख पाते थे। जब सेनाएँ विभाजित हो जाती थीं, तो साम्राज्य को गृह-युद्ध का सामना करना पड़ता था।

प्रश्न 9.
प्रथम दो शताब्दियों में अन्य देशों के प्रति रोमन सम्राटों की नीति की विवेचना कीजिए।
उत्तर:
प्रथम दो शताब्दियों में रोम के अन्य देशों के साथ युद्ध भी बहुत कम हुए। रोमन सम्राट आगस्टस एवं टिबेरियस द्वारा प्राप्त किया गया साम्राज्य पहले ही इतना विस्तृत था कि इसमें और अधिक विस्तार करना अनुपयोगी मालूम होता था। आगस्टस का शासन काल शान्ति के लिए प्रसिद्ध है क्योंकि रोमन लोगों को यह शान्ति दीर्घकाल तक

चले आन्तरिक संघर्षों और सदियों की सैनिक विजयों के पश्चात् मिली थी। साम्राज्य के विस्तार के लिए एकमात्र अभियान रोमन सम्राट त्राजान ने 113 – 117 ई. में किया जिसके फलस्वरूप उसने फरात नदी के पार के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था, परन्तु उसके उत्तराधिकारियों ने उन प्रदेशों पर से अपना अधिकार हटा लिया।

प्रश्न 10.
" पूर्ववर्ती रोमन साम्राज्य की प्रारम्भिक काल की एक विशेष उपलब्धि यह थी कि रोमन साम्राज्य के प्रत्यक्ष शासन का क्रमिक रूप से काफी विस्तार हुआ। " कथन को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
पूर्ववर्ती रोमन साम्राज्य के प्रारम्भिक काल की एक विशेष उपलब्धि यह थी कि रोमन साम्राज्य के प्रत्यक्ष शासन का क्रमिक रूप से काफी विस्तार हुआ। इस काल में अनेक आश्रित राज्यों को रोम के प्रान्तीय राज्य-क्षेत्र में सम्मिलित कर लिया गया। निकटवर्ती पूर्व में ऐसे बहुत से राज्य मौजूद थे। दूसरी शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में फरात नदी के पश्चिम में स्थित राज्यों पर भी रोम ने अधिकार कर लिया। ये राज्य अत्यन्त समृद्ध थे। वास्तव में इटली के सिवाय रोमन साम्राज्य के सभी क्षेत्र प्रान्तों में बँटे हुए थे और उनसे कर वसूल किया जाता था। दूसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य स्काटलैण्ड से आर्मीनिया की सीमाओं तक तथा सहारा से फरात और कभी-कभी उससे भी आगे तक फैला हुआ था। इस समय रोमन साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर था।

प्रश्न 11.
रोमन सम्राटों ने इतने बड़े साम्राज्य पर नियन्त्रण करने और शासन का संचालन करने के लिए क्या उपाय किये?
उत्तर:
रोमन सम्राटों द्वारा विस्तृत साम्राज्य पर शासन करना – सम्पूर्ण रोमन साम्राज्य में दूर-दूर तक अनेक नगर स्थापित किये गए थे, जिनके माध्यम से समस्त साम्राज्य पर नियन्त्रण रखा जाता था। भूमध्य सागर के तटों पर स्थापित बड़े शहरी केन्द्र जैसे कार्थेज, सिकन्दरिया तथा एंटिऑक आदि साम्राज्यिक प्रणाली के मूल आधार थे। इन्हीं शहरों के माध्यम से रोमन सरकार 'प्रान्तीय ग्रामीण क्षेत्रों' पर कर लगाने में सफल हुई थी। इसके फलस्वरूप साम्राज्य को विपुल धन-सम्पदा प्राप्त होती थी। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि स्थानीय उच्च वर्ग रोमन साम्राज्य को कर वसूली और अपने क्षेत्रों के प्रशासन के कार्य में सहायता देते थे।

प्रश्न 12.
" इटली और अन्य प्रान्तों के बीच सत्ता का आकस्मिक अन्तरण वास्तव में, रोम के राजनीतिक इतिहास का एक अत्यन्त रोचक पहलू रहा है। " विवेचना कीजिए।
उत्तर:
दूसरी और तीसरी शताब्दियों के दौरान, अधिकतर प्रशासक तथा सैनिक अफसर उच्च प्रान्तीय वर्गों में से होते थे। इस तरह उनका एक नया संभ्रान्त वर्ग बन गया जो कि सैनेट के सदस्यों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली था, क्योंकि उसे रोमन सम्राटों का समर्थन प्राप्त था। रोमन सम्राट गैलीनस (253 – 268 ई.) ने सैनेटरों को सैनिक कमान से हटाकर इस नये वर्ग के उत्थान में योगदान दिया।

उसने सैनेटरों को सेना में सेवा करने अथवा इस तर्क पहुँच रखने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था ताकि वे साम्राज्य पर अपना नियन्त्रण स्थापित न कर सकें। दूसरी शताब्दी के दौरान तथा तीसरी शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में सेना तथा प्रशासन में अधिकाधिक लोग प्रान्तों से लिए जाने लगे क्योंकि इस क्षेत्र के लोगों को भी नागरिकता मिल चुकी थी जो पहले इटली तक ही सीमित थी। सैनेट पर कम-से-कम तीसरी शताब्दी तक इतालवी मूल के लोगों का प्रभुत्व बना रहा, परन्तु बाद में प्रान्तों से लिए गए सैनेटर बहुसंख्यक हो गए थे।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 13.
रोम के सन्दर्भ में नगर कैसा शहरी केन्द्र था ?
उत्तर:
नगर का शहरी – केन्द्र होना – रोम के सन्दर्भ में नगर एक ऐसा शहरी केन्द्र था, जिसके अपने दण्डनायक (मजिस्ट्रेट), नगर परिषद् (सिटी काउन्सिल) और अपना एक सुनिश्चित राज्य क्षेत्र था जिसमें उसके अधिकार – क्षेत्र में आने वाले कई ग्राम सम्मिलित थे । इस प्रकार किसी भी शहर के अधिकार – क्षेत्र में कोई दूसरा शहर नहीं हो सकता था, किन्तु उसके अन्तर्गत कई गाँव होते थे। किसी गाँव को शहर का दर्जा मिलना सम्राट की कृपा पर निर्भर करता था। इसी प्रकार अप्रसन्न होने पर सम्राट किसी शहर को गाँव का दर्जा प्रदान कर सकता था।

प्रश्न 14.
रोमन साम्राज्य के शहरी जीवन की विशेषताओं का वर्णन कीजिये।
उत्तर:
शहरी जीवन की विशेषताएँ –

1. शहरों में खाने की कमी नहीं थी।
2. अकाल के दिनों में भी शहरों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अच्छी सुविधाएँ प्राप्त होने की सम्भावना रहती
3. सार्वजनिक स्नान गृह रोम के शहरी जीवन की एक प्रमुख विशेषता थी।
4. शहरी लोगों को उच्च स्तर के मनोरंजन प्राप्त थे। उदाहरण के लिए, एक कलेंडर से हमें ज्ञात होता है कि एक वर्ष में कम-से-कम 176 दिन वहाँ कोई-न-कोई मनोरंजक कार्यक्रम या प्रदर्शन अवश्य होता था।
5. शहरों में साक्षरता विद्यमान थी।
6. नगर प्रशासनिक इकाइयों के रूप में क्रियाशील थे। इसलिए वहाँ पर लोगों की सुख-सुविधाओं का ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा, अधिक ध्यान रखा जाता था।

प्रश्न 15.
डॉ. गैलेन के अनुसार रोमन शहरों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के साथ किये जाने वाले व्यवहार का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
डॉ. गैलेन ने लिखा है कि कई प्रान्तों में निरन्तर अनेक वर्षों से पड़ रहे अकाल ने लोगों को यह बता दिया था कि लोगों में कुपोषण के कारण बीमारियाँ हो रही हैं। शहरों में रहने वाले लोगों का फसल कटाई के शीघ्र पश्चात् अगले पूरे वर्ष के लिए काफी मात्रा में खाद्यान्न अपने भण्डारों में एकत्रित कर लेना एक रिवाज था।

गेहूँ, जौ, सेम तथा मसूर और दालों का काफी बड़ा भाग शहरियों द्वारा ले जाने के बाद भी कई प्रकार की दालें किसानों के लिए बची रह गई थीं। सर्दियों के लिए जो कुछ भी बचा था, उसे खा-पीकर समाप्त कर देने के बाद ग्रामीण लोगों को बसन्त ऋतु से ऐसे खाद्यों पर निर्भर रहना पड़ा जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक थे। उन लोगों ने वृक्षों की टहनियाँ, छालें, जड़ें, झाड़ियाँ, अखाद्य पेड़-पौधे और पत्ते खाकर अपने प्राणों को बचाए रखा।

प्रश्न 16.
रोमन साम्राज्य में तीसरी शताब्दी में आए संकटों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
तीसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य को अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। इसकी पुष्टि निम्नलिखित तथ्यों से होती है-

(1) 225 ई. में ईरान में एक साम्राज्यवादी और आक्रामक वंश का प्रादुर्भाव हुआ। इस वंश के लोग स्वयं को ससानी कहते थे। एक प्रसिद्ध शिलालेख से ज्ञात होता है कि ईरान के शासक शापुर प्रथम ने 60,000 रोमन सेना का सफाया कर दिया था और रोम साम्राज्य की पूर्वी राजधानी एंटिऑक पर अधिकार भी कर लिया था।

(2) इसी दौरान जर्मन मूल की कई जनजातियों ने राइन तथा डैन्यूब नदी की सीमाओं की ओर बढ़ना आरम्भ कर दिया। इन जनजातियों ने 233 से 280 ई. तक की अवधि में उन प्रान्तों की पूर्वी सीमा पर बार-बार आक्रमण किये जो काला सागर से लेकर आल्पस तथा दक्षिणी जर्मनी तक फैले हुए थे। परिणामस्वरूप रोमवासियों को डैन्यूब से आगे का क्षेत्र छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा।

(3) रोमन सम्राज्य में तीसरी शताब्दी में थोड़े-थोड़े अन्तर से अनेक सम्राट (47 वर्षों में 25 सम्राट) गद्दी पर बैठे । इससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि तीसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य को भीषण तनाव की स्थिति से गुजरना पड़ा।

प्रश्न 17.
सेन्ट आगस्टीन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
सेन्ट आगस्टीन-सेन्ट आगस्टीन (354-430) 396 ई. से उत्तरी अफ्रीका के हिप्पो नामक नगर के प्रसिद्ध बिशप थे। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन उत्तरी अफ्रीका में व्यतीत किया था। कैथोलिक चर्च के बौद्धिक इतिहास में उनका उच्चतम स्थान था। बिशप लोग ईसाई समुदाय में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्यक्ति माने जाते थे और प्रायः वे बहुत शक्तिशाली होते थे। उन्होंने रोमन साम्राज्य में महिलाओं की शोचनीय स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है कि उनकी माता की उनके पिता द्वारा नियमित रूप से पिटाई की जाती थी। जिस नगर में वे बड़े हुए वहाँ की अधिकतर पलियाँ इसी तरह की पिटाई से अपने शरीर पर लगी खरोंचें दिखाती रहती थीं।

प्रश्न 18.
रोमन साम्राज्य में साक्षरता की स्थिति पर प्रकाश डालिए।
उत्तर:
रोमर साम्राज्य में साक्षरता की स्थिति-रोमन साम्राज्य में काम-चलाऊ साक्षरता की दरें साम्राज्य के विभिन्न भागों में काफी अलग-अलग थीं। उदाहरण के लिए रोम के पोम्पेई नगर में काम-चलाऊ साक्षरता व्यापक रूप से विद्यमान थी। इसके विपरीत, मिस्र में काम-चलाऊ साक्षरता की दर काफी कम थी। मिस्र से प्राप्त दस्तावेज हमें यह बताते हैं कि अमुक व्यक्ति 'क' अथवा 'ख' पढ़ या लिख नहीं सकता था। किन्तु यहाँ भी साक्षरता निश्चित रूप से सैनिकों, सैनिक अधिकारियों, सम्पदा-प्रबन्धकों आदि कुछ वर्गों के लोगों में अपेक्षाकृत अंधिक व्यापक थी।

प्रश्न 19.
"रोमन साम्राज्य में सांस्कृतिक विविधता कई रूपों एवं स्तरों पर दिखाई देती है।" स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
रोमन साम्राज्य में सांस्कृतिक विविधता-रोमन साम्राज्य में सांस्कृतिक विविधता कई रूपों एवं स्तरों पर दिखाई देती है। इसकी पुष्टि निम्नलिखित तथ्यों से होती है-

1. रोमन साम्राज्य में धार्मिक सम्प्रदायों तथा स्थानीय देवी-देवताओं में बहुत विविधता थी।
2. साम्राज्य में बोल-चाल की अनेक भाषाएँ प्रचलित थीं।
3. साम्राज्य में वेशभूषा की विविध शैलियाँ प्रचलित थीं।
4. रोमन लोग तरह-तरह के भोजन खाते थे।
5. साम्राज्य में सामाजिक संगठनों के रूप भिन्न-भिन्न थे।

https://www.evidyarthi.in/

6. उनकी बस्तियों के अनेक रूप थे।
7. अरामाइक निकटवर्ती पूर्व का प्रमुख भाषा-समूह था। मिस्र में काप्टिक; उत्तरी अफ्रीका में प्यूनिक तथा बरबर और स्पेन तथा उत्तर-पश्चिम में कैल्टिक भाषा बोली जाती थी।

प्रश्न 20.
रोमन साम्राज्य की आर्थिक प्रगति का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
रोमन साम्राज्य की आर्थिक प्रगति –
(1) रोमन साम्राज्य में बन्दरगाहों, खानों, खदानों, ईंट-भट्टों, जैतून के तेल की फैक्ट्रियों आदि की संख्या बहुत अधिक थी, जिनसे साम्राज्य का आर्थिक आधारभूत ढाँचा काफी मजबूत था।

(2) गेहूँ, अंगूरी शराब तथा जैतून का तेल मुख्य व्यापारिक मदें थीं। ये वस्तुएँ मुख्यतः स्पेन, गैलिक प्रान्तों, उत्तरी अफ्रीका, मिस्र तथा अपेक्षाकृत कम मात्रा में इटली से आती थीं।

(3) शराब, जैतून का तेल तथा अन्य तरल पदार्थों की ढुलाई ऐसे मटकों या कंटेनरों में होती थी, जिन्हें 'एम्फोरा' कहते थे।

(4) स्पेन में जैतून का तेल निकालने का उद्यम 140-160 ई. के वर्षों में अपने चरमोत्कर्ष पर था। उन दिनों स्पेन में उत्पादित जैतून का तेल मुख्य रूप से ऐसे कंटेनरों में ले जाया जाता था जिन्हें 'ड्रेसल -20 कहते थे।

(5) रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत बहुत से ऐसे क्षेत्र आते थे जो अपनी असाधारण उर्वरता के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। इनमें इटली के कैम्पैनिया, सिसली, मिस्र के फैय्यूम, गैलिली, बाइजैकियम (ट्यूनीसिया), दक्षिणी गाल तथा बाएटिका (दक्षिणी स्पेन) के प्रदेश उल्लेखनीय थे।

(6) सबसे बढ़िया किस्म की अंगूरी शराब कैम्पैनिया से आती थी।
सिसली तथा बाइजैकियम रोम को भारी मात्रा में गेहूँ का निर्यात करते थे।
गैलिली में गहन खेती की जाती थी।

(7) इस काल में जल-शक्ति से मिलें चलाने की प्रौद्योगिकी में खासी प्रगति हुई। स्पेन की सोने और चाँदी की खानों में जल-शक्ति से खुदाई की जाती थी।

(8) उस समय साम्राज्य में सुगठित वाणिज्यिक तथा बैंकिंग व्यवस्था थी।

प्रश्न 21.
रोमन साम्राज्य में दासों के प्रति किये गए व्यवहार के बारे में रोमन इतिहासकार टीसटस न क्या लिखा है?
उत्तर:
रोमन इतिहासकार टैसिटस ने लिखा है कि शहर के शासक ल्यूसियस पेडेनियस सेकेण्डस का उसके एक दास ने वध कर दिया। प्राचीन रिवाज के अनुसार यह आवश्यक था कि एक ही छत के नीचे रहने वाले प्रत्येक दास को फाँसी की सजा दी जाए। परन्तु बहुत से निर्दोष लोगों के प्राण बचाने के लिए एक भीड़ इकट्ठी हो गई और शहर में दंगे शुरू हो गए। भीड़ ने सैनेट भवन को घेर लिया।

यद्यपि सैनेट भवन में सैनेटरों ने दासों के प्रति अत्यधिक कठोर व्यवहार किये जाने का विरोध किया गया, परन्तु अधिकांश सदस्यों ने सजा में परिवर्तन किए जाने का विरोध किया। अन्त में उन सैनेटरों की बात मानी गई जो दासों को फाँसी दिए जाने के समर्थक थे। परन्तु पत्थर और जलती हुई मशालें लिए क्रुद्ध भीड़ ने इस आदेश को

https://www.evidyarthi.in/

लागू किये जाने से रोका। परन्तु रोमन सम्राट नीरो ने अभिलेख द्वारा ऐसे लोगों को बुरी तरह फटकारा और उन समस्त. रास्तों पर सेना को नियुक्त कर दिया जहाँ सैनिकों के साथ दोषियों को फाँसी पर चढ़ाने के लिए ले जाया जा रहा था।

प्रश्न 22.
रोमन साम्राज्य में दासों की स्थिति पर प्रकाश डालिए।
उत्तर:
रोमन साम्राज्य में दासों की स्थिति-भूमध्यसागर और निकटवर्ती पूर्व दोनों ही क्षेत्रों में दासता की जड़ें... बहुत गहरी थीं। वहाँ दास-प्रथा बड़े पैमाने पर प्रचलित थी। इटली में तो गुलामों का बोलबाला था। रोमन सम्राट आगस्टस के शासन काल में इटली की कुल 75 लाख की जनसंख्या में 30 लाख दास थे। यद्यपि उच्च वर्ग के लोग दासों के प्रति प्रायः क्रूरतापूर्ण व्यवहार करते थे, परन्तु सामान्य लोग दासों के प्रति काफी सहानुभूति रखते थे।

जब प्रथम शताब्दी में शान्ति स्थापित होने के साथ लड़ाई-झगड़े कम हो गए, तो दासों की आपूर्ति में कमी आने लगी और दास – श्रम का प्रयोग करने वालों को दास – प्रजनन अथवां वेतनभोगी मजदूरों जैसे विकल्पों का सहारा लेना पड़ा। बाद की अवधि में कृषि क्षेत्र में अधिक संख्या में दास-मजदूर नहीं रहे। अब इन दासों और मुक्त हुए गुलामों को व्यापार-प्रबन्धकों के रूप में बड़ी संख्या में नियुक्त किया जाने लगा। मालिक प्रायः अपने दासों अथवा मुक्त हुए दासों को अपनी ओर से व्यापार चलाने के लिए पूँजी की व्यवस्था कर देते थे और कभी-कभी उन्हें सम्पूर्ण कारोबार सौंप देते थे।

प्रश्न 23.
पाँचवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में रोमन अभिजात वर्ग की आमदनियों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
पाँचवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में रोमन अभिजात वर्ग की आमदनियाँ – इतिहासकार ओलिंपि ओडोरस के अनुसार रोम के उच्च घरानों में से प्रत्येक के पास अपनी आय में वह सब कुछ उपलब्ध था जो एक मध्यम आकार के शहरों में हो सकता है। एक घुड़दौड़ का मैदान (हिप्पोड्रोम), अनेक मंच – मन्दिर, फव्वारे और विभिन्न प्रकार स्नानागार आदि थे। बहुत से रोमन परिवारों को अपनी सम्पत्ति से प्रतिवर्ष 4,000 पाउण्ड सोने की आय प्राप्त होती थी। इसमें अनाज, शराब और अन्य उपज शामिल नहीं थी; इन उपजों को बेचने पर सोने में प्राप्त आय के एक-तिहाई के बराबर आय हो सकती थी। सेम में द्वितीय श्रेणी के परिवारों की आय 1,000 अथवा 1,500 पाउण्ड सोना थी।

प्रश्न 24.
रोमन साम्राज्य के परवर्ती काल में वहाँ की नौकरशाही के उच्च तथा मध्य वर्गों की स्थिति का वर्णन कीजिए। सरकार ने इन वर्गों में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने के लिए क्या उपाय किये?
उत्तर:
परवर्ती काल में रोमन साम्राज्य की नौकरशाही के उच्च तथा मध्य वर्गों की आर्थिक दशा – परवर्ती काल में रोमन साम्राज्य. की नौकरशाही के उच्च तथा मध्य वर्ग अपेक्षाकृत बहुत धनी थे क्योंकि उन्हें अपना वेतन सोने के रूप में मिलता था और वे अपनी आय का काफी बड़ा हिस्सा जमीन आदि खरीदने में लगाते थे। इसके अतिरिक्त रोमन साम्राज्य में भ्रष्टाचार बहुत फैला हुआ था, विशेष रूप से न्याय प्रणाली तथा सैन्य आपूर्ति के प्रशासन में। उच्च अधिकारी और गवर्नर लूट- खसोट और रिश्वत के द्वारा खूब धन कमाते थे। अतः सरकार ने भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए अनेक कानून बनाए। इतिहासकारों एवं अन्य बुद्धिजीवियों ने भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों की कटु निन्द्रा की।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 25.
परवर्ती काल में रोम के तानाशाह सम्राटों पर अंकुश लगाने के लिए क्या उपाय किये गए ?
उत्तर:
रोम के तानाशाह सम्राटों पर अंकुश लगाना- रोमन राज्य तानाशाही पर आधारित था। रोम के सम्राट अपना विरोध अथवा आलोचना सहन नहीं करते थे । वे हिंसात्मक उपायों द्वारा अपने विरोधियों का दमन करने का प्रयास करते थे। परन्तु चौथी शताब्दी तक आते-आते रोमन कानून की एक प्रेबल परम्परा शुरू हो गई थी और उसने रोम के तानाशाह सम्राटों पर अंकुश लगाने का प्रयास किया। इन कानूनों के अन्तर्गत सम्राट लोग अपनी मनमानी नहीं कर सकते थे।

नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए कानूनों का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किया जाता था। कानूनों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए एम्ब्रोस नामक शक्तिशाली बिशप ने कहा था कि यदि सम्राट सामान्य जनता के प्रति कठोर एवं दमनकारी नीति अपनायें, तो बिशप भी उतनी ही अधिक शक्ति से उनका मुकाबला करें।

evidyarthi